स्थापन दिवस के 24वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

शोध पत्र

(हिंदी साप्ताहिक)

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल,
स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

www.shaharsamta.com

अंक 41 | पृष्ठ 19 | वर्ष 24

रविवार, इलाहाबाद, 19 अक्टूबर 2025

R.N.I.- UPHIN/2001/3996 ISSN- 2581-6128

R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 25वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

शोध पत्र

www.shaharsamta.com

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव

सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

वर्ष 25 अंक 22 रविवार, इलाहाबाद, 19 अक्टूबर 2025 पृष्ठ 4 विशेषांक मूल्यः 3 रू0

संपादकीय

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

नारी मन की कल्पकला का ,
कोई भी है मोल नहीं ।
प्रेम, दुलार, स्नेह और ममता ,
इसका कोई तोल नहीं ।

तो बात हो रही है महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की । हर रचनाकार की अपनी कला है । अपनी अभिव्यक्ति है, और अपना ही कल्प संसार है । गीत-गजल और कविता के माध्यम से अपने-अपने विचारों को संजो कर रखने वाली हर रचनाकार को मैं बधाई देता हूं । हर युग में नारी ने समाज का मान बढ़ाया है । चाहे वह सतयुग हो, त्रेता हो या द्वापर, नारी मन की अभिव्यक्ति और विचारों से भरा पूरा है । आईए देखते हैं इस विशेषांक में छपी हुई कुछ रचनाओं की बानगी

पहली बानगी

ना जीत चाहिए, ना हार चाहिए,
परमात्मा बस तेरा दीदार चाहिए
घिरे है आशा निराशा के घोर अंधेरों में,
लालच ,पिपासा और संदेह के घेरों में
तेरी ज्योति का , हर पल उजियार चाहिए ।
बस तेरा थोडा सा हमें प्यार चाहिए

कविताएं

जौनपुर इकाई

चला बान्हि आई राखी

चला बान्हि आई राखी सवनवां में
भाई के भवनवां में ना।
भाई बहिन के त्यौहार साल
में आवै एक बार, हो सुन्दर
छवि बसै सबके नयनवां में
भाई के भवनवां में ना।
हो चला बान्हि आई राखी
सवनवां में भाई के भवनवां में ना।
भाई सीमा पर तैनात मन में
भरे जज्बात,हो याद करत होइहैं
खूब अपने मनवां में भाई के भवनवां में ना।
हो चला बान्हि आई राखी सवनवां में
भाई के भवनवां में ना।
भाई बाटैं बहुत दूर होके
बहिन मजबूर भरै नीर अपने निरमल
नयनवां में भाई के भवनवां में ना।
हो चला बान्हि आई राखी सवनवां में
भाई के भवनवां में ना।

डॉ मधु पाठक

सावन में शिव

सत्यम शिवम सुंदरम के स्वामी,
हे शिव शंभू अन्तार्यामी,
सुना है सावन मनभावन में,
धरती के धानी आँगन में,
तुम आते हो ।।

दूरित दैन्य और कष्ट मिटाने
जन जीवन को सरल बनाने
खुशियों के पल देने वाले
हे शिव शंभू तुम आते हो ।।

कौन धरा पर ऐसा भोले
जो मांगे दे देता है
पीकर विष दुःख दूर करे
अमिय सुधा बरसाते हो ।।

मानव जीवन के पैमाने
इसी तुला पर तुलते यदि
हो जाती यह धन्य धरा
खुशियों के सागर लहराते ।।

डॉ 0 सुमन सिंह

सात कांड सुंदर भइले
सुंदर कांड सुंदर भइले
तुलसी अवधी में जागृति विहंग भइले
मन में सच्चिदानंद दिहले ना।
प्रेम चंद कथाकार
दिहले जीवन दृष्टि अपार।
अपनी करूणा से सुघर संसार दिहले ना।

डॉ पूनम श्रीवास्तव

सावन मनभावन

सावन का महीना बड़ा प्यारा है
दिल से लगे हमको न्यारा है
हरे हरे खेत खलियान हर हर है
यह सावन का महीना लगे बड़ा न्यारा
सखियां चली है कजरी खेलन
करके 16 हो श्रृंगार करके
16 हो श्रृंगार हाथ में मेहंदी
हाथ में कंगन हरी हरी चूड़ियां
नाम सावन का महीना हरियाली
नाम लगे बड़ा प्यार ना बाजार से है
सजना जाकर मेहंदी ले आना
जाकर मेहंदी ले आना
मुझे सखियों से है रचना
मुझे सखियों से है रचना
क्योंकि कल में कजरी खेलन जाना है
मौज मनाना है ना सखियों के संग
कजरी में खेलो झूला झूला झुलु
झूला झुलु झूला झुलु
हमें झुलु उमंग से भरी सावन की हरियाली ना ल
गी बड़ी प्यारी ना उमंग से भरी सावन की हरियाल
ी ना लगे बड़ी प्यारी ना सावन के महीने में जाए
हम मायके जब हम मायके मिलती है हमको सखियां
प्यारी प्यारी ना लागे बड़ी प्यारी ना है वापस बचपन
मेरा हाथ से खेल खिलाएं सवेरा यहां से खिलखिल
ा है सवेरा सब कर मिलकर बतिया प्यारी प्यारी नाम
लगे बड़ा प्यार ना सब करें बतिया बचपन की प्यारी
प्यारी न छाई हरियाली ना सावन का महीना लगे
प्यारा प्यारा न छाई हरियाली ना

डॉ रीना श्रीवास्तव

नोयडा इकाई

ये प्यारी बेटियाँ भी ना

ये प्यारी बेटियाँ भी ना
जाने कब बड़ी हो जाती हैं
पहल कदमी करते -करते

दिल से रिश्ते सभी निभाती है

3) ख्वाब बुनती है कुछ सुनहले से
नींद में भी वो मुस्कुराती है

4) उम्र गुज़री है बेकरारी में
अब मिली है तो रूठ जाती है

5) आखरी साँस जब तलक रहती
आस का दीप वो जलाती है

डा शिवानी चंद्रा

माँ कैसे तुझ पर कलम चला पाऊँ

माँ, क्या लिखूं तेरे बारे में
निशब्द हूँ तेरे अथाह प्रेम के आगे
मेरा अस्तित्व हैं माँ तुझसे ही
दिल की हर धड़कन में तेरा ही नाम

तेरी शीतल क्रोड़ सुरभित पुष्प-सी
संगीत-सरगम सा है तेरा-मेरा रिश्ता
मुझे बनाने में न्योछावर सब किया
जरूरत नहीं रही कभी भी अलार्म की

नौ महीने हर कष्ट सहकर गर्भ में रखा
रक्त-स्वेद बूँदों से सिंचित किया आपने
बचपन में समझ नहीं पाई तेरा त्याग
स्वयं माँ बन जाना है तेरा निश्चल प्रेम

माना कि तेरी ही सुंदर परछाई हूँ मैं
पर आप जैसे गुणों का मुझमें अभाव
सागर-लहर सम अनवरत चलती रहती
खुशी का आँचल मेरे लिए खोलती रही

आप से ही तो मेरा मायका है हँसता
उम्र के इस दौर में भी मुझे बच्ची जानती
बता माँ कैसे तुझ पर कलम चला पाऊँ
वर्णन तेरी महानता का कैसे हो मुझसे।

अर्चना कोहली 'अर्चि'
नोएडा (उत्तर प्रदेश)

जिंदगी का हमें अब भरोसा नहीं।

जिंदगी का हमें अब भरोसा नहीं।
साँस कब टूटती सारा धोखा यही।

ढूंढना क्यों जमाने में खुशियाँ हमें।
उसकी बातों का हमको भरोसा नहीं।

इस अंक में

1. महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

उमेश श्रीवास्तव

....पृष्ठ 1

2. कविताएं

....पृष्ठ 2

रविवार, इलाहाबाद, 19 अक्टूबर 2025

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

नारी मन की कल्पकला का ,
कोई भी है मोल नहीं ।
प्रेम, दुलार, स्नेह और ममता ,
इसका कोई तोल नहीं ।

तो बात हो रही है महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक की । हर रचनाकार की अपनी कला है । अपनी अभिव्यक्ति है, और अपना ही कल्प संसार है । गीत-गजल और कविता के माध्यम से अपने-अपने विचारों को संजो कर रखने वाली हर रचनाकार को मैं बधाई देता हूं । हर युग में नारी ने समाज का मान बढ़ाया है । चाहे वह सतयुग हो, त्रेता हो या द्वापर, नारी मन की अभिव्यक्ति और विचारों से भरा पूरा है । आईए देखते हैं इस विशेषांक में छपी हुई कुछ रचनाओं की बानगी

पहली बानगी

ना जीत चाहिए, ना हार चाहिए,
परमात्मा बस तेरा दीदार चाहिए
घिरे है आशा निराशा के घोर अंधेरों में,
लालच ,पिपासा और संदेह के घेरों में
तेरी ज्योति का , हर पल उजियार चाहिए ।
बस तेरा थोड़ा सा हमें प्यार चाहिए

दूसरी बानगी

यह सच है.. की खामोशियां भी बोलती हैं,
खामोशियां ..दिल के राज खोलती है।
बिन कहे.. नजरे भी बहुत कुछ बोलती है,
मन के भेदों को .. कमबख्त खोलती हैं

तीसरी बानगी

हमारी हिंदी की महिमा बड़ी निराली है
बड़ी प्रभावी है बड़े गुण वाली है!
यहां की बोलियों का दिल पे राज होता था!
अवधी ,ब्रज ,भोजपुरी, का रिवाज होता था!

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक का यह सफर चल रहा है और चलता रहेगा । रचनाकार बेहतर से बेहतर रचना देती रहे और समाज इंसान को प्रफुलित करती रहे, यही मेरी कामना है। अंक कैसा लगा प्रतिक्रिया अवश्य दें ।

अंत में -

शब्द-शब्द लिख-लिख कर ,
बनाओ बिम्ब तुम ऐसा ।
जैसे लल्ला पालना में सोए ,
मां दुलाराऐ जैसा ।

- उमेश श्रीवास्तव

कविताएं

जौनपुर इकाई

चला बान्हि आईं राखी

चला बान्हि आईं राखी सवनवां में
भाई के भवनवां में ना।
भाई बहिन के त्यौहार साल
में आवै एक बार, हो सुन्दर
छवि बसै सबके नयनवां में
भाई के भवनवां में ना।
हो चला बान्हि आईं राखी
सवनवां में भाई के भवनवां में ना।
भाई सीमा पर तैनात मन में
भरे जज्बात,हो याद करत होइहैं
खूब अपने मनवां में भाई के भवनवां में ना।
हो चला बान्हि आईं राखी सवनवां में
भाई के भवनवां में ना।
भाई बाटै बहुत दूर होके
बहिन मजबूर भरै नीर अपने निरमल
नयनवां में भाई के भवनवां में ना।
हो चला बान्हि आईं राखी सवनवां में
भाई के भवनवां में ना।

डॉ मधु पाङ्क

सावन में शिव

सत्यम शिवम सुंदरम के स्वामी,
हे शिव शंभू अन्तर्यामी,
सुना है सावन मनभावन में,
धरती के धानी आँगन में,
तुम आते हो ।।

दूरित दैन्य और कष्ट मिटाने
जन जीवन को सरल बनाने
खुशियों के पल देने वाले
हे शिव शंभू तुम आते हो ।।

कौन धरा पर ऐसा भोले
जो मांगे दे देता है
पीकर विष दुःख दूर करे
अमिय सुधा बरसाते हो ।।

मानव जीवन के पैमाने
इसी तुला पर तुलते यदि
हो जाती यह धन्य धरा
खुशियों के सागर लहराते ।।

डॉ ० सुमन सिंह

पिया मोर विदेश बा

सखी सावन में पिया मोर विदेश बा
आवय क ना संदेश बा ना ।

सुन लो कोयल सुन लो काग
पिया जिया लेके भाग
झुला झूले सखी ,मोके ना सोहात बा
पिया मोर विदेश बा ना ।

कइसे पहिरी हरियर साड़ी
दिन बीते रात भारी
बीत जाए ना इ ,सावन जी डेरात बा
पिया मोर विदेश बा ना ।

सासु तोर पैया लागू
ननदी तोर कहना मानू
पिया के आवे खातिर ,
भेज दे तू तार बा
पिया मोर विदेश बा ना ।

आया सावन मनभावन
हमरे पिया जी के आवन
कईके सोलहो सिंगार ,जी अघात बा पिया मोर विदेश बा ना ।

डॉ रेनू राय

तुलसी और प्रेमचंद

तुलसी प्रेमचंद सबके आनंद दिहले
मन में सच्चिदानंद दिहले ना।
मन में बढ़ल जाला आनंद
त्याग तप ह सूरज चंद
खुद तपन में रहके
सबके पवन मंद मंद दिहले
मन में सच्चिदानंद दिहले।।
सात कांड सुंदर भइले
सुंदर कांड सुंदर भइले
तुलसी अवधी में जागृति विहंग भइले
मन में सच्चिदानंद दिहले ना।
प्रेम चंद कथाकार
दिहले जीवन दृष्टि अपार।
अपनी करूणा से सुघर संसार दिहले ना।

डॉ पूनम श्रीवास्तव

सावन मनभावन

सावन का महीना बड़ा प्यारा है

दिल से लगे हमको न्यारा है
हरे हरे खेत खलियान हर हर है
यह सावन का महीना लगे बड़ा न्यारा
सखियां चली है कजरी खेलन
करके १६ हो श्रृंगार करके
१६ हो श्रृंगार हाथ में मेहंदी
हाथ में कंगन हरी हरी चूड़ियां
नाम सावन का महीना हरियाली
नाम लगे बड़ा प्यार ना बाजार से है
सजना जाकर मेहंदी ले आना
जाकर मेहंदी ले आना
मुझे सखियों से है रचना
मुझे सखियों से है रचना
क्योंकि कल में कजरी खेलन जाना है
मौज मनाना है ना सखियों के संग
कजरी में खेलो झूला झूला झुलु
झूला झुलु झूला झुलु
हमें झुलु उमंग से भरी सावन की हरियाली ना लगी बड़ी प्यारी ना
उमंग से भरी सावन की हरियाली ना लगे बड़ी प्यारी ना
सावन के महीने में जाए हम मायके जय हम मायके मिलती है
हमको सखियां प्यारी प्यारी ना लागे बड़ी प्यारी ना है
वापस बचपन मेरा हाथ से खेल खिलाएं सवेरा यहां से खिलखिला है
सवेरा सब कर मिलकर बतिया प्यारी प्यारी नाम लगे बड़ा प्यार ना
सब करें बतिया बचपन की प्यारी प्यारी न
छाई हरियाली ना सावन का महीना
लगे प्यारा प्यारा न छाई हरियाली ना

डॉ रीना श्रीवास्तव

नोयडा इकाई

ये प्यारी बेटियाँ भी ना

ये प्यारी बेटियाँ भी ना
जाने कब बड़ी हो जाती हैं
चहल क़दमी करते -करते
चिड़िया बन उड़ जाती हैं

सूना कर देती आँगन
घर बसाती साजन का
हल्दी तेल और महावर
हाथों मेंहदी रच जाती है

कब आ जाती वो घड़ी
लाल जोड़ा सज जाता है
आता एक राजकुमार

राजकुमारी ले जाता है

मात -पिता की लाड़ली
दुलार नाजों से पली
जाने कब हो गई पराई
संग पिया के वो चली

बिटिया की खुशी में ही
हमारी भी छिपी खुशी है
सदा खुश रहे दुलारी
दुआएँ हमारी भी यही हैं

कोई ग़म तुझे छू न पाए
हर दिन तेरे लब मुस्काए
तू लक्ष्मी है मेरे घर की
पिया घर कमल महकाए

अवंतिका विशाल'अवि'

ग़ज़ल

१) लाल जोड़े में सज के आती है
इक मकाँ को ये घर बनाती है

२) रिश्ते -नाते सभी नए फिर भी
दिल से रिश्ते सभी निभाती है

३) ख़्वाब बुनती है कुछ सुनहले से
नींद में भी वो मुस्कुराती है

४) उम्र गुज़री है बेक़रारी में
अब मिली है तो रुङ्क जाती है

५) आखरि़ी साँस जब तलक़ रहती
आस का दीप वो जलाती है

डा शिवानी चंद्रा

माँ कैसे तुझ पर कलम चला पाऊँ

माँ, क्या लिखूँ तेरे बारे में
निशब्द हूँ तेरे अथाह प्रेम के आगे
मेरा अस्तित्व हैं माँ तुझसे ही
दिल की हर धड़कन में तेरा ही नाम

तेरी शीतल क्रोड़ सुरभित पुष्प-सी
संगीत-सरगम सा है तेरा-मेरा रिश्ता
मुझे बनाने में न्योछावर सब किया
जरूरत नहीं रही कभी भी अलार्म की

नौ महीने हर कष्ट सहकर गर्भ में रखा
रक्त-स्वेद बूँदों से सिंचित किया आपने
बचपन में समझ नहीं पाई तेरा त्याग
स्वयं माँ बन जाना है तेरा निश्चल प्रेम

माना कि तेरी ही सुंदर परछाई हूँ मैं
पर आप जैसे गुणों का मुझमें अभाव
सागर-लहर सम अनवरत चलती रहती
खुशी का आँचल मेरे लिए खोलती रही

आप से ही तो मेरा मायका है हँसता
उम्र के इस दौर में भी मुझे बच्ची जानती
बता माँ कैसे तुझ पर कलम चला पाऊँ
वर्णन तेरी महानता का कैसे हो मुझसे।

अर्चना कोहली 'अर्चि'
नोएडा (उत्तर प्रदेश)

जिंदगी का हमें अब भरोसा नहीं।

जिंदगी का हमें अब भरोसा नहीं।
साँस कब टूटती सारा धोखा यही।

ढूंढ़ना क्यों जमाने में खुशियाँ हमें।
उसकी बातों का हमको भरोसा नहीं।

दर्द ने ही किया दिल को घायल सदा।
आशिकी ही मिलेगी भरोसा नहीं।

पंछियों का ठिकाना नहीं दोस्तो।
उड़ कहाँ जाएंगे अब भरोसा नहीं।

कोई खिड़की से प्रज्ञा खड़ा देखता।
बात भी हो सकेगी भरोसा नहीं

प्रवीणा त्रिवेदी प्रज्ञा

अइहे ना तोहे मनाइब हो...

ङङअइहे ना तोहे मनाइब हो,
बिरहा के बड़ जराइब हो...।।
सावन आयल फूल खिलइले,
हथवा में हम मेहंदी सजइले,
कजरारी अखियन से बतियाइब हो,
अइहे ना तोहे मनाइब हो...।।
बंसी की तान सुनत रह गइली,
पिया बिना मन बउरा रहली
हरी-हरी चूड़ी छनकाइब हो,
अइहे ना तोहे मनाइब हो...।।

बिरहा की आग बुझइला खातिर,
मन में रचाइल पिया के चित्र,
पायल बजाके रिझाइब हो,
अइहे ना तोहे मनाइब हो...।।
झूला पर सजनिया बुलावेला,
मनुहार सनेहिया बहावेला,
'सुनीता' मन से मन ,मिलाइब हो
अइहे ना तोहे मनाइब हो...।।

सुनीता जौहरी
वाराणसी

ना जीत चाहिए, ना हार चाहिए,

ना जीत चाहिए, ना हार चाहिए,
परमात्मा बस तेरा दीदार चाहिए

घिरे है आशा निराशा के घोर अंधेरों में,
लालच ,पिपासा और संदेह के घेरों में
तेरी ज्योति का , हर पल उजियार चाहिए ।
बस तेरा थोड़ा सा हमें प्यार चाहिए

ना जीत .....

बाहरी उजालों में भ्रमित हो , विचर रहें है,
नहीं सुनते है किसी की ,शंकित हो चर रहे है।
व्यथित हो, विष मधुशाला में रम रहा मन,
बस तेरा थोड़ा सा हमें खुमार चाहिए।

ना जीत .....।।

क्यों दूसरों की खुशी में ,ना खुशी ढूंढते हैं,
बस दूसरों की बुराई से हम जूझते हैं ।
कभी पूछा है खुदी से, बेखुदी को ढूंढते हैं,
बस तेरा थोड़ा सा , हमे दुलार चाहिए।
ना जीत .....

अर्चना चौहान किरतपुर

गणपति वन्दन।

शिव गौरी के लाडले,विरल हो तुम गजानन,
ऊर्जा के संवाहक हो तुम,हे पार्वती नन्दन।
स्थूल शरीर में पाया तुमने गज ही रुप,
सूक्ष्म रुप में स्थित हो तुम, हम सबमें मूर्त रुप।
सामाजिक चेतना तुम सरीखी,दिखती नही है भारी,
प्रकृति की सत्ता तुममें भरी
हुई है सारी।
समाजिक, आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक, रुप में हो विद्यमान,
वेद,पुराण ,उपनिषद करतें हैं तुम्हारा ही गुणगान।

मस्तक बड़ा तुम्हारा देता,
है यही शुभ सन्देश,
मस्तिष्क को अपने हे मनुष्य दो सुन्दर परिवेश।
छोटी आंखे सूक्ष्म दर्शी हैं,मानव को बतलायें,
दूरदर्शी बन रहो तुम मानवता फैलाओ।
सूंड तुम्हारी बताती चलती, अच्छे बुरे का ज्ञान,
सही गलत का निर्णय कर मनुष्य बने महान।
परिवार का समूह में रहना, करता है आह्वान,
अपनी जड़ो से कटो नहीं,अपनी बनाओ पहचान।
उदर तुम्हारा सिखलाता है, उदारता से रहना,
अच्छी-बुरी बातों को अपने ही में संजोना।
मूलाधार में स्थित रहकर, स्थित-प्रज्ञ बन जाओ,
सुख-दुःख आये जीवन में,फिर भी स्थिर रह पाओ।
मूषक का जीवन में है,अपना खास मुकाम,
छोटो को भी साथ रख चलो यही भारतीय पहचान।
एक दन्त से शिक्षा लेकर भारत सिरमौर बनेगा,
पूरी पृथ्वी पर केवल,
भारत-भारत का जयघोष मचेगा।

मंजु गुप्ता,बिजनौर।

वर्षा रानी

मान भी जा वर्षा रानी।
मत बरसा इतना पानी।
भरे हैं सारे ताल - तलैया।
जहां तहां पानी पानी।।

गिरते पेड़ किनारों से।
प्रलय मचाती धारों से।
दहशत में आई दुनिया।
टूट के गिरते पहाड़ों से
छोड़ भी दे ये मनमानी।
मान भी जा वर्षा रानी।।

डर टपके का सताबे री।
मुंह को कलेजा आबै री।
बूढ़ी अम्मा भूखी प्यासी
कोई ना धीर बंधावे री।
बहते आंसू कहे कहानी।
मान भी जा वर्षा रानी।।

गली चौबारों में पानी।
याद आ गई है नानी।
कामकाज ना कुछ होता।
तूने मन में क्या ठ्ठानी।
अब सजा खेत चूनर धानी।
मान भी जा वर्षा रानी।।

कैसे अपनी फसल बोए रे।
गांङ्ग की पूंजी भी खोए रे।
पकड़के सर बैङ्गा है किसना।
भरे खेत क्या होय रे।
कैसे होगी रे गुड़धानी।।
मान भी जा वर्षा रानी।।

डॉक्टर पूनम चौहान
धामपुर बिजनौर।

परवाह

'ये परवाह ही है,जो जीवन जीने की राह देती है,
हर मुश्किल में भी परवाह,आनंदित कर जीने देती है।
परवाह से ही तो है,हर सांस में रिश्तों का ख्याल,
परवाह बिन सारे रिश्तों का,हो जाता है बेजार हाल।।

परिवार-समाज-देश,सभी परवाह से आवेष्टित होते हैं,
तभी तो सब हर जगह,एक दूसरे के प्रति समर्पित होते हैं।
माता-पिता की परवाह ही,संतान में आत्मीयता भरती है,
उनकी असहाय अवस्था में,अपने बुजुर्गों का ख्याल रखती है।।

ये परवाह ही तो है,जो रूह को परमात्मा से जोड़ती है,
उसी परवाह से ईश्वर की,अहैतुकी कृपा हमें प्राप्त होती है।
गर वो हरि ना करते हमारी परवाह, तो क्या हम सांस ले पाते,
बिन हरि परवाह ना मिलती प्रेम सौगात,हम बिन प्रेम कैसे जी पाते।।

परवाह तो अरुणोदय की भाँति,लाती जीवन में स्वर्णिम भोर,
बाहर का शोर होजाता शाँत,जब परवाह होती सिरमौर।
आज संबध परवाह के अभाव में,सहजता से टूट जाते हैं,
ये परवाह ही है कि,
हम एक दूसरे से नेहबंधन में जुड़ जाते हैं।।

जहाँ परवाह हो ,वहाँ ही सच्चे संबधों का उदय होता है
वरना तो जीवन बस,एक औपचारिकता मात्र रह जाता है।।'

डॉ आभा माहेश्वरी
अलीगढ़

गीत

जोड़कर नाते उलझना, उलझनों की बाट पाना,
है कहाँ आसान प्रियतम !बंधनों को काट पाना ?

हम सुखों की सेज पर भी जुगनुओं से जागते हैं,
आँख खोले रात भर चिंतन मनन में भागते हैं।
भूल जाएँ हम जहाँ सोकर हमारे तप्त अनुभव,
है कहां सौभाग्य ऐसी वह अनोखी खाट पाना ?

भाग्य के लेखे बदलते ही नहीं हैं जानते हैं,

कर्म पर भी है भरोसा कर्मफल भी मानते हैं,
मिल रहा हो सुख जहाँ दुख वेदना पीड़ा बदल कर,
है कहाँ संयोग ऐसे विनिमयों की हाट पाना?

जो परस्पर लड़ रहे संवाद तक करते नहीं हैं,
भूल जाते प्रेम परिचय याद तक करते नहीं हैं,
रात दिन जो हो रही हैं और गहरी और गहरी,
है कहाँ संभव भला उन खाइयों को पाट पाना?

हारते हैं संकटों से जिंदगी की इस डगर में,
डूब जाते हैं लहर में जो भटकते हैं भँवर में ,
जन्म लेना और मरना बन गया हो लक्ष्य जिनका,
है कहाँ प्रारब्ध उनका वह बनारस घाट पाना?

ऋतुबाला रस्तौगी

कानपुर इकाई

चमके भाग्य सितारे

शुभाशीष गुरु जी का पाकर,चमके भाग्य सितारे।
बुद्धि कोष विकसित होते हैं,साधक के पौबारे ।।

मिला लेखनी को बल बूता,वर्ण शब्द सध जाते।
तत्सम तद्भव समास जाना,अलंकार इतराते ।।
सजी वर्णिका अब भावों में,सुन्दर सृजन सँवारे ।
शुभाशीष गुरु जी का पाकर,चमके भाग्य सितारे।।

सीख शब्द संयोजन हमने, छंदों को रच डाला ।
बने मापनी के अनुगामी,सृजित गीत की माला ।।
जान गए जब बारीकी को, लेखन खूब निखारे ।
शुभाशीष गुरु जी का पाकर,चमके भाग्य सितारे ।।

भिन्न नियम हों भिन्न विधाएँ ,सहज सर्जना होती।
मातु शारदे प्रेरक बल से ,बीज भाव के बोती ।।
कालजयी रचनायें होतीं,सर्जक स्वर्ग सिधारे।
शुभाशीष गुरु जी का पाकर,चमके भाग्य सितारे ।।

सीमा वर्णिका

सीख

तू अपनी खुबिया ढूढ़
खामियां निकालने वाले लोग हैं न

अगर रखना है कदम तो आगे रख
क्योंकि पीछे खींचने को लोग है न

सपने देखने है तो ऊंचे देख
नीचे गिराने को लोग हैं न

प्यार करना हैं तो खुद से कर
नफरत करने को लोग हैं न

अगर लोगों का काम भी आप ही सोचने लगोगे
तो लोग क्या करेंगे?

डॉ हेमा पांडे

मनभावन है सावन

आया है सावन रिमझिम रिमझिम बरस रहा है,
यादें बचपन की याद कर कर
फिर से मन भीगने को तरस रहा है,
चारों तरफ पानी का भर जाना,
वह यादों में चुनरी का लहराना
छत पर जाकर वह बार-बार भीग जाना,
वो नाव का पानी में तैराना,
हो रही है सुख की अनुभूति,
की कितना प्यारा बचपन हमारा सुंदर और सरस रहा है।
वह अपने गांव में जाना, वो
पेड़ों पर झूले पड़ जाना
सहेलियों के साथ ऊंची ऊंची पेंग बढ़ाना,
वो मां का बार-बार आवाज लगाना, वह गुड़ियों के साथ खेलना और खिल
जाना,
यूं अचानक से बड़ा होना कुछ अखर रहा है
यादों का झरना आज मन के सरोवर में - झर झर रहा है।
ऐसे ही नहीं, मन को भाता है, सावन,
एक पावन कड़ी से जुड़ता है साथ,
महीना है यह मेरे महादेव का,
कृपा करते सब पर भोलेनाथ,
हो अंधेरा कितना भी जीवन में,
राहें कितनी भी हो मुश्किल,
आज हर कोई खुशियों के लिए तरस रहा है,
है वो खुद नसीब
जिन पर हमारे महादेव का आशीर्वाद बरस रहा है।
आया है सावन रिमझिम रिमझिम बरस रहा है।

पुष्पा सिंह

शत्रु की सूरत में छुपा अपना ही अक्स

मत पूछो कौन है मेरा शत्रु, सब अपनी चाल चलाते हैं,
चेहरे पर हँसी लिए, दिल में खंजर सजाते हैं।

जो साथ चला था वक़्त के हर मोड़ पर साया बनकर,
वही पीठ पीछे आग में रिश्तों को जलाते हैं।

कभी जो मेरी हार पे आँसू बहाता था चुपके से,
अब मेरी जीत पे नज़रों को चुराते हैं।

शब्दों की तलवारें चलाना आसान होता है,
कुछ लोग खामोशी से दिल चीर जाते हैं।

मैंने भी देखा है दुश्मनों की महफ़िल सजती हुई,
जहाँ अपने ही मुझे पराया बनाते हैं।

अब तो आइना भी डरता है मुझसे कुछ कहने को,
शत्रु की सूरत में अक्सर अपने ही नज़र आते हैं।

कैसे करें भरोसा फिर वफ़ाओं की भाषा पर,
जब नक़ाब पहनकर लोग फ़रेब सिखाते हैं।

बस एक दुआ है रब से इस ज़ालिम ज़माने में,
झूठ की दुनिया में कुछ चेहरे तो सच्चे बच जाते हैं।

सुनीता गुप्ता

सावन

सावन में कारे बदरा छाए,
बागों में मोर-पपिहा गाए।
झूले पड़ गए डाली पर,
सखियां मिल सब कजरी गाएं।

मेघों ने बिजली चमकाई,
झूम झूम के बारिश आई।
शीतल मन्द हवाओं ने फिर,
पिया मिलन की आस जगाई।

पक्षियों का कलरव गूंजे गगन में,
तरु पल्लव सब झूमे वन में।
पुष्प खिलखिला रहें हैं ऐसे,
जैसे धरा बनी स्वर्ग सावन में।

हरियाली हर ओर दिख रही है,
सावन में प्रकृति मुसका रही है।
गीली मिट्टी की सुगंध सी जैसे,
प्रकृति सुगंध फैला रही है।

श्रद्धा श्रीवास्तव

शिव की महिमा

शिव की महिमा जय -जय भोलेनाथ,
नाथों के भी तुम नाथ।
खेवनहार बनके, हाथ थाम लीजिए।।
हस्त में डमरू लिए, गल सर्प धारे हुए।
मस्तक चँदा शोभित, गंग बहा दीजिए।।
आपकी जो मिले भक्ति, सकल की सर्वशक्ति।

आशीष मिले शिव का, इच्छा पूरी कीजिए।
शिव की जानें महिमा, शिव की जानें गरिमा।
आदि और अंत शिव, यह जान लीजिए।।
शिव -शिव जपो सभी, ध्यान लगा कर अभी।
सुमिरन शिव नाम, आङ्गों याम कीजिए।।

सुषमा सिंह उर्मि

एक ताज़ा ग़ज़ल

जिसका हर रोज़ मेरे दिल मे ङ्किकाना होगा।
दरमियाँ कोई तो एक रब्त पुराना होगा।।

तुमको जुल्मत के अंधेरों को मिटाने के लिये।
खून ए दिल से ही हर एक दीप जलाना होगा।।

सच की आवाज़ से आवाज़ मिलाते जाना।
है यकीन मुझको फिर झङ्क को जाना होगा।।

आज गर्दिश सही पर होंसला क़ायम है मेरा।
मेरे क़दमो तले कल सारा ज़माना होगा।।

दर्द तो लाख मिलेंगे तुझे उल्फत में अज़ीज़।
इश्क की शर्त है हर दर्द मिटाना होगा।।।

अफ़रोज़ अज़ीज़

कजरी गीत

बदरा घूमे गगनवा हो रामा
मोरे अंगनमा ....
रिम झिम बरसे सावनमा हो रामा मोरे अंगनवा ....

पिया बसो मोरे सात समुंदर
तड़फत जियरा अंदर ही अंदर
सुन्न लागे भवनमा हो रामा
मोरे अंगनवा...

सास ननदि मोहे ताना मारे
बिटवा को काहे विदेश पङ्गवे
रिम झिम बरसे नयनमा हो रामा
मोरे अंगनवा.....

आस लगाए मेरे दोनों नैना
बीत जाए अब बिरह की रैना
बैरी हो गईल सजनमा हो रामा
मोरे अंगनवा ....

पतिया लिख-लिख ताप बुझावे
रोई - रोई संताप मिटावे
भेजो संदेशा पहुनवा हो रामा

मोरे अंगनवा....

अर्चना झा अन्नू
दिल्ली

संस्कारों की पूंजी

जख्म़ देकर भी आप अनजान है दूसरों से ,
हमें कुछ हासिल नहीं अपनी कुर्बानियों से ।

क्यूं हार गए अपनी इन तैयारियों से ,
आप तो चल भी न पाए इन बैसाखियों से ।

शिकायत इतनी क्यों है इन अंधेरों से ,
अनजान न हों उजालों की मुश्किलों से ।

हम ख़ुश हैं अपने महकते घर के कोनों से ,
गिन भी न सके कितने सिर कटे इन फूलों से ।

मंजिल मिल ही जाती है कठिन रास्तों से ,
जब दिलों में जोश भर जाए इन हौसलों से ।

जीवन जब भर जाए सबकी दुआओं से ,
तब कोई गिला न रहे खुद की तक़दीरों से ।

घरों में जब धूप मुस्कुराए संस्कारों से ,
हर कोना महक उठेगा खुशियों के फूलों से ।

सिर्फ संस्कार परिवार बनाते हैं दिलों में यादों से ,
कुछ भी साथ नहीं जाता दौलत के ढेरों से ।

सरिता कपूर

मैं भारत हूँ

मैं भारत हूँ
कश्मीर की सुंदरता हूँ
कन्याकुमारी की भगवती अम्मान मंदिर हूं
अरुणाचल की उगती हुई सूरज हूं मैं
तो कच्छ शहर की रण उत्सव हूं
मैं भारत हूं
संसार का पथप्रदर्शक हूँ

मैं राजस्थान की धूल हूँ
तो चेरापूंजी की बारिश हूँ
मैं रामायण का राम हूँ
तो महाभारत का कृष्णा हूँ
मैं भारत हूँ
शांति का दूत हूँ
मैं संसार का प्रथम लिखा हुआ ग्रंथ वेद हूँ

तो मैं तथाकथित देवों की भाषा संस्कृत हूँ
मैं महावीर, गौतम बुद्ध, गुरु नानक हूँ
मैं चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य अशोक हूँ
मैं महाराणा प्रताप शिवाजी रानी लक्ष्मीबाई हूँ
मैं भगत सिंह राजगुरु सुखदेव हूँ
मैं सुभाष हूँ
तो मैं आज़ाद हिन्द फौज हूँ

मैं भारत हूँ
कोई आंख दिखाए तो
उसकी आंख नोचने की क्षमता रखती हूँ
मैंने बहुत अत्याचार देखा हैं
मैंने बहुत आक्रमणकारियों को देखा हैं
तो उन सबको पीङ्ग दिखाकर भागते हुए भी देखा हैं
मैं भारत हूँ
पता नहीं कितनी पुरानी हूँ
मुझे मिटाने वाले खुद मीट गए
मेरी मृत्यु नहीं हैं
मैंने बहुतों वीर सैनिकों को जन्मा हैं
जिनके वीरता के सामने सब को
मुहँ की खाना पड़ता है
मैं भारत हूँ
दुनिया को दोस्ती का पाङ्ग पढ़ाता हूँ

मल्लिका डे बिष्णु

कहां मिलेगा श्याम

ढूँढ़ रही हूँ श्याम को
कहां मिलेगा श्याम।
रहती है राधा जहाँ
वहीं मिलेगा श्याम।।

ढूँढ़े रे मन राधिका
उसका कहां निवास।
अपने भीतर झाँक लो
राधा करती वास।।

राधा ही मन मन्दिर है
मन में धर लो ध्यान।
काहे मन भटके फिरे
तुझमें बसता श्याम।।

गीता लिम्बू
शिलांग

भारत भूमि

भारत भूमि, तेरी गाथा,
जन-जन के होंङ्गों पर,
तेरे हर कण में है जीवन,

झुककर टेकें तुझको माथा।।

हर मन में है तेरा गौरव,
महके तेरी मिट्टी का सौरभ,
दिशा दिशा में हरदम गूंजे,
तेरे मधुर जयघोष का स्वर।

तेरी मिट्टी में पल कर बड़े हुए,
हम है तेरे वीर सिपाही,
जल, थल, वायु की सरहद पर,
सीना ताने खड़े हुए हैं,
हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई।।

लहू की बूंदों से सींचा माटी को,
कभी न झुकने देंगे तिरंगे को,
रखेंगे इसका सम्मान,
तेरी रक्षा की खातिर,
कर देंगे ये जीवन कुर्बान।।

सेवा तेरी धर्म हमारा,
रक्षा तेरी कर्म हमारा,
दुश्मन को न बढ़ने देंगे,
तेरी खातिर भारत माता,
जान न्योछावर हम कर देंगे।

मेरा भारत सबसे महान,
हिंदी बढ़ाए इसका मान,
हिमालय, गंगा इसकी शान,
मेरा भारत बड़ा महान।

नीता शर्मा
शिलांग, मेघालय

कवि की जमीन

मैं हूँ जहाँ खड़ी
वह है जमीन नहीं कल्पना नहीं अकेली विक्षुब्ध मैं
साथ है किसी कवि की करुण वेदना
आवृत्त है जिसमें विद्रोह, क्रोध की भावना
आवाह्न करते जो
फूट पड़ो, उफन जाओ, तटबंधों को तोड़ डालो
चलाओ गोलियाँ -
हिंसक विचारों और भावनाओं पर
आतंक और क्रूरता पर
चलाओ गोलियाँ -
अहिंसा का आवरण डाले भेड़ियों पर
दया की भीख माँगते उन हाथों पर

कायर और भीरुओं पर
चलाओ गोलियाँ -
जो चंद पैसों के खातिर
बेच देते हैं अपना धर्म और ईमान
लूट लेते हैं अपनी धारा को वेदना
अब तक सिसकती रही करुणा अश्रु बहाती रही
भावना अपंग, व्याकुल होती रही
पर आज क्रांति मुखरित होगी ज्वालामुखी बंद फूट पड़ेगी
तार-तार कर देगी
अत्याचारी, शोषकों, देशद्रोहियों के जाल को
हिंसक, क्रूर, स्वार्थी विचारों को
सार्थक तब होगी कवि की करुण वेदना
जहाँ है केवल जमीन नहीं कल्पना।

डॉ अनीता पंडा 'अन्वी'

मानवता ही धर्म

क्या देश में आज अनेकता में भी एकता है !
क्यों यह प्रश्न बार-बार दिल को कुरेदता है ।
मानव आज क्यों भरमाया फिरता है!
कुछ बोलना भी चाहे तो लबों को सी लेता है ।
ऐसा ना हो कुछ बोल लोगों को आहत कर दें ,
धैर्य, संयम के एहसास को खत्म कर दे।
खामोश देख रहे सब अपने अज़ीजों को ।
पता नहीं किस भेष में बैठे हों अपने रक़ीबों को।
कौन जाने अपनों में ही कोई गैर निकल आए ।
खड़े जहां है वहीं जमीन अपनी न खिसक जाए।।
क्यों धर्म की आड़ में एक दूसरे से खार खाए बैठे हैं !
'मत अनेक, धर्म एक' इस बात को भुलाए बैठे हैं
आओ मिल बैठें सब एक हो जाएं ।
अनेकता मे ही एकता, इस बात को दोहराएं।।

दया शर्मा
शिलांग (मेघालय)

कल आज और कल

कल सुंदर सी धरा थी ,
खुशियाँ बिखरी पड़ी थी ,
साझा परिवार साझे थे चूल्हे ,
एक कमजोर हो तो सब मिल सम्भाले ,

घर के दादा मुखिया होते ,
उनसे ही घर ,आँगन ,चौपाल सजते ,
आज एकल है परिवार ,
नही किसी से सरोकार ,

नही किसी की दखलंदाजी ,
पहनावे पर भी मन मरजी ,
घर के होते नही काम ,

पिज्जा ,बर्गर से चलाते काम ,

चिट्ठियों का दौर खत्म हुआ ,
मोबाइल पर मैसेज ,चैटिंग शुरू हुआ ,
कल न जाने क्या होगा ,
रोबोट सब काम करेगा ,

युग बदला , बदला मन ,
बीमारियों से भर गया है तन ,
कल को वापस लाना है ,
भाई चारा बढ़ाना है ।

मीना नागोरी
गोलाघाट असम

कविता आओ भारत वासियों योग को अपनाए

आओ भारत वासियों योग को अपनाए
प्राणायाम करें, शरीर के व्यर्थ विकार मिटाए ।

भोर होते ही चलती है जो, ठंडी ठंडी हवाएं
पैदल चलकर उन्हें अपनी, सांसों में समाए ।

खानपान अच्छा रखे,चाहे छप्पन भोग खाए
रहे निरोग तन तो, मन भी खुश हो जाए ।

नशा है कलियुग का राजा, इसे ना अपनाए
मत भूलो,भारतीय संस्कृति ही घर को स्वर्ग बनाएं ।

भारत के हर घर में, संस्कारों का ऐसा उद्योग लगाए
हर घर से निकली संताने, इन्हीं कदमों पर चलती जाए।

हो चारों ओर ऐसी हरियाली,जहां माधव बंसी बजाए
खेतों में उपजे अनाज और हरे साग, फल ही खाए।

छोड़ दे बाजारू चीजें खानी, जो अपच कर जाए
स्वास्थ्य धन सबसे बड़ा,यही पूर्वज भी थे बतलाए ।

बाहरी अशुद्ध पेय छोड़,नींबू पानी आम पन्ना को अपनाए
खुश रहे औरों को भी खुश रहने का यही मंत्र दे जाएं।

सीमा सिंघी
गोलाघाट असम

एक उड़ान अधूरी रह गई...

कल एक उड़ान अधूरी रह गई,
आसमान में एक खामोशी सी छा गई।
जो चले थे सपनों को पंख देने,
वो ज़मीन से ऊपर कभी लौट न पाए।

माँ की ममता, बच्चे की मुस्कान,
किसी की दुआ, किसी का अरमान –
सब पलभर में बिखर गए बादलों संग,
एक क्षण में ही टूट गया जीवन का रंग।

वो हँसी जो गूंजती थी हवाओं में,
अब रह गई गूंज बन कर सदाओं में।
जो बैठे थे आस लिए उस जहाज़ में,
अब नाम लिखे हैं बस खबरों के आवाज़ में।

कितनों की दुनिया उजड़ गई होगी,
कितनों की आँखें नम हो गई होंगी।
कोई बेटे का इंतज़ार करता रहा,
कोई बेटी की साड़ी संभालता रहा।

पर ये भी सच है –
दुर्घटनाएँ सिर्फ मशीनों की नहीं होतीं,
कभी लापरवाही, कभी नियति की चाल होती है।
पर हर बार इंसानियत ही रोती है।

चलो मौन हों दो पल के लिए,
उन आत्माओं के लिए,
जो उड़ते-उड़ते
हमेशा के लिए सितारों में बस गईं।

सरला बजाज
गोलाघाट

खामोशियां भी बोलती हैं

यह सच है.. की खामोशियां भी बोलती हैं,
खामोशियां ..दिल के राज खोलती है।
बिन कहे.. नजरे भी बहुत कुछ बोलती है,
मन के भेदों को .. कमबख्त़ खोलती हैं

मौन रह कर भी, बातें हो जाती है,
अपने पराये की, पहचान हो जाती है।
मुस्कुरा कर भी, खामोशी छा जाती है,
दिन बोले भी ..हर बात हो जाती है।

खामोशियां.... मौन स्वीकृति दे देती है,
खामोशियां प्यार का, इजहार कर देती है।
दिन में जब ...दर्द जब कभी बढ़ जाता है,
खामोशियां...इंसान से सबकुछ कह देती हैं।

खामोशियों को... समझना मुश्किल होता है,
समझने वाला.. बहुत कुछ समझ जाता है।
हमे लब खोलने की जरूरत ..नहीं पड़ती..,

खामोशियां सब कुछ ....कह देती हैं।

रंजना बिनानी काव्या
गोलाघाट असम

जबलपुर इकाई

हिन्दी दिवस में

अक्षर बिखरे हैं नभ में, जैसे दीपक की ज्योति,
ज्ञान-संस्कृति का संगम, करती भारत की गोद।

हर वर्ण में है शक्ति, हर शब्द में है प्रकाश,
हिंदी का गान निरंतर, देता जीवन को विश्वास।

पुस्तक साक्षी है प्रगति की, कलश भरे संस्कार,
त्रिरंगा संग उमंग लिए, हिंदी भाषा अपार।

अनीता दुबे

हिन्दी हिन्द देश की भाषा

हिन्दी हिन्द देश की भाषा ।
भारत गौरव की परिभाषा ।।
हिन्दी है जन -जन की बोली ।
मधुर सुरों में सजती डोली ।।

हिन्दी दीपक ज्योति जलाती ।
अंध तमस को दूर भगाती ।।
भारत की पहचान बताती ।
हिन्दी जीवन मंत्र सुनाती ।।

हिन्दी उर की गूँज पुरानी ।
संत गिरा की मधुर कहानी ।।
मीरा तुलसी सूर ने गाया ।
रस गीतों का सार सिखाया ।।

मीरा गाए प्रेम सुहाना ।
कबिरा बोले सत्य पुराना ।।
हिन्दी रस की गागर भारी ।
मन मोहित करती सुखकारी ।।

हिन्दी से ही जुड़ता नाता ।
जन मन ही इसको अपनाता ।।
भारत माँ का दिव्य सितारा ।
हिन्दी से जग जीतो सारा ।।

जय हो हिन्दी जय जय माता ।
जन - जन तेरी महिमा गाता ।।
हिन्दी दिवस दिलों को भाता ।

हिन्द निवासी गौरव पाता ।।

डॉ कुमकुम शुक्ला

हिंदी की आराधना

आराधना करती हूं अपनी भाषा हिंदी का।
अभिनंदन करती हूं अपनीसंस्कृति का
मां देवी शक्ति सर्जना उनके माथे की रोली।
मां के आंचल में हमने सीखी बोली
अपने दोनों हाथों से सुगंधित शब्द सुमन अर्पित ।
पूजन अपनी संस्कृति का अर्चन अपनी भाषा का ।
अपने निराला रत्नाकर के रहते किसकी धारा के बीच बहे ।
हम इतने निर्धन नहीं हैं वाणी से औरों के ऋणी रहे ।
ऊंचाई है तुलसी की सूरदास की गहराई ।
कबीर दास के दोहे की विद्यापति की पुरवाई ।
महादेवी की छाया हो जयशंकर की जय जयकार ।
बच्चन जी की मधुशाला बिहार के रस रंग भरी ।
गर्जन अपनी संस्कृति का यह गुंजन अपनी भाषा का ।
मानव मूल्य जगाने वाली भाषा है गौरवशाली।
इसकी शोभा अगर अमर हो हिंदी है वैभवशाली।
मैथिली के पुष्पों जैसी मेरी यह अभिलाषा ।
विश्व में सबसे आगे हो मीङ्गी बोली हिंदी भाषा ।

रचना सक्सेना
जबलपुर

हा मैं सिर्फ हिन्दी हूँ

हा मैं सिर्फ हिंदी हूँ
अपनी भारत माता के
माँथे पे लगी बिंदी हूँ

ऊँ के उच्चारण से, भगीरथ के तपोवन से।
शिव जटाओं से निकली, बहती गंगा कल कल से।
हा मैं सिर्फ हिंदी हूँ

सरस्वती के वीणा अंदर, हर शब्द मेरा बना सुंदर।
करोड़ों मनुज स्वर निकली, शब्दों के भरे समंदर।
हा मैं सिर्फ हिंदी हूँ

माँ की मीङ्गी बोली में, प्यार की हर एक लोरी में।
सुस्वागतम से निकली, बिखरी बाबुल आँगन में ।
हा मैं सिर्फ हिंदी हूँ

अमवा की डाली में, रुङ्के बाबा की गाली में।
बुलबुल सी मीङ्गी बोली, प्यार भरी ङ्किङ्कोली में।
हा मैं सिर्फ हिंदी हूँ

भारत की समृद्धि में, गीता वेद पुराणों में।

राम के बाणों से निकली, ले संस्कारों बातों में।।
हा मैं सिर्फ हिंदी हूं

मनमोहन की अधरों से, बाँस बनी बाँसुरी से।
सप्त स्वर बनाती निकली, वृंदावन की गलियों से।
हा मैं सिर्फ हिंदी हूँ

लाल किले की दीवारों से, शहीद हुए मातृभूमि से ।
वीर सपूतों के मुँह निकली, जय हिंद जय भारत से।
हा मैं सिर्फ हिंदी हूँ

हिंदी को तुम यू न खोना, भूलोगे फिर पड़ेगा रोना।
वेद ग्रंथ पन्नों से निकली, हिंदी भाषा का होना।
हा मैं सिर्फ हिन्दी हूँ

हिंदी का उत्थान करों, मातृभाषा का ध्यान धरों।
हिमालय पर्वत से निकली, हिंदी का अब पीर हरों।
हां मैं सिर्फ हिंदी हूँ

अपनी मां भारत माता के,
मांथे पे लगी बिंदी हूँ,
हा मैं सिर्फ हिन्दी हूँ ।

सिद्धेश्वरी सराफ 'शीलू '
जबलपुर

आओ मिलकर बोलें

हिन्द और हिंदी की महिमा
सकल जगत से न्यारी है ।
भाव भाष्य की सुन्दर गाथा
शब्द ब्रह्म अधिकारी है ।।

सबसे ज्यादा बोली जाए
कोशिश करते रहो सदा ।
नव पीढ़ी ये बात समझ लो
हिंदी - हिंदी कहो सदा ।।

स्वप्न सलोने हिंदी में ही
कर्म धर्म सब हिंदी में ।
देवनागरी लिपि ही लिखना
बात करो अब हिंदी में ।।

कोशिश करने से ही प्यारे
बात बनेगी सच जानो ।
हिंदी हिंदी कहते जाओ

माँ सम इसको ही मानो ।।

छाया सक्सेना ' प्रभु

हिंदी गुणगान में दोहे

हिंदी में आते सदा,
अपनेपन के अंक।
भाषा रुचिकर ही लगे, पढ़ते रहे निरंक।।

२ बिंदी हम सबकी बने, पतित पावनी जान ।
संस्कार में है पली, गद्य पद्य पहचान।।

३ हिंदी भाषा में मिले ,
कामधेनु का क्षीर।
जन-जन की बोली अमर,
गंगा जमुना नीर।।

४ वर्ण वर्ण अक्षर सजे,
हिंदी भाषा शान।
इसकी खुशबू में सदा, कविता उपजें गान।।

५ बच्चों को सिखलाइए, हिंदी गिनती ज्ञान ।
अपनी बोली बोलिए, उच्चारण रख ध्यान ।।
जय हिंद जय हिंदी

उमा मिश्रा प्रीति

हमारी हिन्दी

हिन्दी हमारी शान है
हिंदी हमारी आन है
हिंदी हमारी भाषा में
पूरा ही हिंदुस्तान है।।

हिंदी हमारी है सरल
हिंदी हमारी है सहज
हिंदी हमारी भाषा पर
हम सबको अभिमान है।।

हिंदी हमारी है अनमोल
जिसका न कोई मोल
हिन्दी हमारी भाषा को
सोच -समझ कर बोल।

हिन्दी है प्रेम की भाषा
और जन-जन की भाषा
हिन्दी सबको जोड़ती है

ममता- दुलार की भाषा।।

हिन्दी में ही हमारे राम है
हिन्दी में हमारे श्याम है
हिन्दी हमारी भाषा में
शिव शंकर भगवान हैं।।

हिन्दी में है सूर,तुलसी
हिन्दी में ही कबीरा है
हिन्दी साहित्य में रहीम,
हिन्दी में भक्त मीरा है।।

आशा जाकड़,

बने राष्ट्र भाषा

हिंदी है पहचान देश की,मस्तक पर ज्यों मुकुट धरा।
एक सूत्र में हमें पिरोए इसमें है सम्मान भरा।।

जननी रही संस्कृति सबकी, हिंदी का दर्जा ऊँचा।
बने राष्ट्रभाषा अभी हिंदी, प्रेम सहित सबको सींचा।।
वर्ण-व्याकरण की सुंदरता, अर्थों का संसार भरा।
हिंदी है पहचान देश की, मस्तक पर ज्यों मुकुट धरा।।

है वैज्ञानिक भाषा हिंदी,छंद गीत अनमोल यहाँ।
भाव भावना गौरव दर्शन, अलंकार रस सभी जहाँ।।
शब्द शब्द में गहराई है, उच्चारण का सार खरा।
हिंदी है पहचान देश की, मस्तक पर जो मुकुट धरा।।

सब मिलकर आवाज़ उठ्ठाएँ, हिंदी बने राष्ट्रभाषा।
साल पचहत्तर बीत गए हैं, अब भी बनी राजभाषा।।
सदा एकता पाठ्य पढ़ाया, पर खुद में है दर्द भरा।
हिंदी है पहचान देश की, मस्तक पर ज्यों मुकुट धरा।।

अनुराधा गर्ग दीप्ति

हमारी हिंदी की महिमा

हमारी हिंदी की महिमा बड़ी निराली है
बड़ी प्रभावी है बड़े गुण वाली है!

यहां की बोलियों का दिल पे राज होता था!
अवधी ,ब्रज ,भोजपुरी, का रिवाज होता था!
सूर तुलसी कबीर मीरा यहां गाते थे!
प्रभु के गुणगान यहां करते ना अघाते थे !
राजे राजवाड़ों में भी इसकी धार बहती थी!
नैन और सैन में भी प्रेम कथा कहती थी!
इन्हीं सब बोलियों ने भाषा को संवारा है!

रूप को निखारा है, सबसे जो प्यारा है !

देश को जब भी थी जरूरत यहां बलिदानों की!
राष्ट्रभक्ति से जुड़े ओज के तरानों की!
हिंदी से जुड़े लाल तब आगे आए!
श्यामलाल मैथिली शरण और सोहनलाल आये!
बालकृष्ण और बिस्मिल ने भी तराने गाये!
युवा घर छोड़कर समर में तब उतर आये!
देश पर जब भी किसी संकट के बादल छाये!
हिंदी के कवि भी तभी फर्ज निभाने आये!

हिंदी में नारियों का भी सम्मान होता था!
महादेवी और सुभद्रा का ज्ञान होता था!
कृष्णा ,ममता और मैत्रयी इसी में लिखती हैं!
कथा कहानी और उपन्यास में भी दिखती हैं !
शिवानी , मालती ,सूर्यबाला ने संवारा है!
सभी ने हिंदी का चेहरा यहां निखारा है!
नारी सशक्तिकरण बढ़ाता है !
ज्ञान उन्नति के ये सोपान भी चढ़ाता है!

दिनकर निराला हमें अब भी प्रेरणा देते!
और अज्ञेय हमें अब भी चेतना देते!
नये प्रयोगों से हिंदी संवरती है!
नयी विधाओं में भी ये निखरती रहती है!
इसमें आलोचकों का भी स्थान रक्षित है!
नयी पीढ़ी को संवारना भी इनका लक्षित है!
सभी विधाओं में हिंदी सभी से कहती है!
पढ़ो और आगे बढ़ो भावना भी रहती है!

प्रगति के साथ विरासत इसी में संभव है!
ज्ञान के साथ संस्कार इसका उद्भव है!
संयुक्त राष्ट्र में भी अब तो हिंदी गूंजती है!
अनेकों देशों को इसकी पढ़ाई सूझती है !
वर्णमाला भी इसकी सबसे वैज्ञानिक है!
कंप्यूटिंग के लिये ये समस्थानिक है !
देश की एकता की इसमें संभावना है!
और सच पूछो तो ये विश्व गुरु भावना है!

इसीलिए तो हम हिंदी दिवस मनाते हैं!
एक पखवाड़े इसी के ही गीत गाते हैं!
ओ हिंदी प्रेमियों लो अपनी भी आवाज मिला!
तभी तो होगा मातृभाषा का भी कुछ तो भला!
जब हिंदी पाएगी सम्मान जो हक इसका है !
उड़ाओ हिंदी का झंडा और एक सुर बोलो!
जोर से हिंद की जय और जय हिंदी बोलो!

डॉ साधना शुक्ला

हिंदी

हमारी हिंदी भाषा को सदा,—आबाद रखने दो,
जहां में चमके हिंदी भी, बिंदी को निखरने दो।

बड़ी उन्नत ये भाषा है सभी गुणगान तो कर लो,
चमन में बगवा सा रूप,— हिंदी को संवरने दो।

भारी जो गाथा इसमें देश के, कुर्बान वीरों की,
वतन पर मर मिटे थे जो,— ग्रंथों में लिखने दो।

निराला पंत कबीर तुलसी, भाषा हिंदी भाती थी,
लिखावट हिंदी हो सबकी, रंग में इसके रंगने दो।

किया साकार सपना को,- सदा ये मातृभाषा जो,
उजाला देश की माटी पे,- जुगनू बन चमकने दो।

रामायण वाल्मीकि ने, निराला लिखे गए परिमल,
कहानी गीत गजलों के,— धुनों को खूब बजने दो।

कड़ी जो जोड़ती है एकता,—बंध कर सभी रहते,
भरी जो सभ्यता संस्कृति मंजू चंदन सा महकने दो।

मंजूलता नागेश
प्रयागराज उत्तर प्रदेश

शहर समता

* * * *

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धम्तरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332 Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।